

मेरा पालनहार अल्लाह है

هندي

प्रेम

www.with-allah.com



मुहम्मद बिन सररर अलयामी
डाक्टर अब्दुल्लाह बिन सालिम बा हम्माम

1) प्रेम:

अल्लाह से प्रेम करने का अर्थ:

अल्लाह से प्रेम:

अर्थात् दिल का अल्लाह तआला से मानूस होना और उस की ओर झुकना और जो अल्लाह चाहे उस पर तुरंत हमी भरना,और दिल पर अल्लाह की याद का गालिब होना।

अल्लाह से प्रेम करने की हकीकत

अल्लाह की मुहब्बत का अर्थ उस की इबादत,विनम्रता,और उस के सम्मान से मुहब्बत करना,अर्थात् मुहब्बत करने वाले के दिल में महबूब अल्लाह की महानता और उस का सम्मान हो,जो इस बात का तकाज़ा करे कि बंदा उस के आदेश का पालन करे और जिन चीज़ों से उस ने रोका है रुक जाये,और यही मुहब्बत ईमान और तौहीद की असल है,और इस की इतनी प्रतिष्ठायें हैं जिसे गिना नहीं जा सकता, और अल्लाह की मुहब्बत में से यह भी है कि उन जगहों,ज़मानों(समय) और लोगों अथवा कार्यों और कथनों आदि उन चीज़ों से प्रेम किया जाये जिन से अल्लाह तआला प्रेम करता है।

जैसा कि यह अनिवार्य है कि अल्लाह से प्रेम खालिस(शुद्ध) अकेले अल्लाह के लिये हो,और यह फितरी मुहब्बत के विपरित नहीं है,जैसे बच्चे का अपने बाप से और बाप का अपने बच्चे से,

और शिक्षक का अध्यापक से और अध्यापक का शिक्षक से प्रेम करना,या जैसे खाने, पीने, शादी, पनहाव और दोस्तों इत्यादि से प्रेम करना ।

हाँ हराम मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत में शिर्क करना है,जैसे मुश्रिकों का अपने बुतों और अपने वलियों से मुहब्बत करना,या जिन चीज़ों को नफस महबूब रखे उसे उन चीज़ों पर मुकद्दम रखना जिन्हे अल्लाह महबूब रखता है,या उन ज़मानों (समय) जगहों,और लोगों अथवा कार्यों और कथनों आदि उन चीज़ों से प्रेम करना जिन से अल्लाह तआला प्रेम नहीं करता है,और यह बर्बादी है,अल्लाह तआला ने फर्माया: {और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहरा कर उन से ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिये,और ईमान वाले अल्लाह से प्रेम में सख्त होते हैं"}[अल बकरा: 165].

अल्लाह तआला से मुहब्बत की प्रतिष्ठा:

1- यही असल तौहीद है,और तौहीद की रूह यह है कि अकेले अल्लाह तआला के लिये मुहब्बत को खालिस किया जाये,बल्कि यही वास्तविक इबादत है,और तौहीद उस समय तक पूरा नहीं होगा जब तक कि बंदे की मुहब्बत अपने रब के लिये पूरी न हो जाये और सब मुहब्बत की जाने वाली चीज़ों से आगे और उन पर गालिब न आ जाये,और उन पर इस का हुक्म न चले,वह इस प्रकार कि जिन चीज़ों को बंदा महबूब रखता है

उन्हें इस मुहब्बत के अधीन करे जिस में बंदे की खुशी और उस की कामयाबी छुपी हुयी है।

2- दुखों के समय मुहब्बत करने वाले को तसल्ली मिलती है,मुहब्बत करने वाला मुहब्बत की लज़ज़त के कारण अपने ऊपर आने वाले दुखों को भूल जाता है,और उस के लिये परेशानियों का झेलना सरल हो जाता है।

मुहब्बत,भय,और आशा जैसी की जाने वाली अल्लाह की कोई इबादत नहीं है।

अल्लाह से मिलने का शौक ऐसी हवा है जो दिल पर चल कर दुनिया की चमक को समाप्त कर देती है।

3- पूर्ण नेमतें और अधिकतर प्रसन्नता: यह अल्लाह तआला की मुहब्बत के बिना प्राप्त नहीं हो सकती,तो दिल बेनियाज़ नहीं हो सकता, और उस की दोस्ती पूरी नहीं हो सकती और न वह आसूदा हो सकता है मगर अल्लाह की मुहब्बत से और उस की ओर मुतवज्जेह हो कर,अगर उसे मज़ा करने की सारी चीज़ें मिल जायें तो वह न तो मानूस होगा और न ही वह मुतमइन होगा मगर अल्लाह तआला की मुहब्बत से,अल्लाह तआला की मुहब्बत नफसों के सुकून का कारण है,और साफ सुथरे दिलों,पविन्न रूहों, पाकीज़ा अक्लों के निकट अल्लाह तआला की मुहब्बत,उस की उनसियत और उस से मिलने के शौक से अधिक मीठी,लज़ीज़,पविन्न,खुश करने वाली और अधिक बेहतर कोई चीज़ नहीं है,और वह



मिठास जिसे मोमिन अपने दिल में महसूस करता है हर मीठी चीज़ से उत्तम है, और उसे जो मज़ा इस कारण हासिल होगा वह हर मजे से अच्छा और हर एक लज़ज़तों से बढ़ कर होगा। «तीन चीज़ें जिस के अन्दर पाई जायेंगी वह उन के ज़रिये ईमान की मिठास पालेगा: अल्लाह और उस के रसूल उस के निकट सब से अधिक प्रिय हों, आदमी किसी से मुहब्बत न करे मगहर अल्लाह तआला के लिये, और कुफ़्र में लौटने को ऐसे ही नापसंद करे जब कि अल्लाह तआला ने उसे बचा लिया है जैसे वह आग में डाले जाने को नापसंद करता है।» (बुखारी, मुस्लिम, नसाई).

जिसे अल्लाह की मुहब्बत से सुकून और उनसियत न हो संसार में उस से अधिक कोई बदबख्त नहीं है.

अल्लाह की मुहब्बत प्राप्त करने वाले कारण:

हमारा रब जो सर्वशक्तिमान है वह उस से प्रेम करता है जो अल्लाह से प्रेम करता है और उस की निकटता ढूँडता है, और अल्लाह की मुहब्बत की प्राप्ति उस समय होगी जब बंदा अपने रब से हर एक चीज़ से अधिक प्रेम करे, अल्लाह की मुहब्बत हासिल करने के कारण विस्तार से इस प्रकार हैं:

1- कुरआने करीम की तिलावत गौरौ फिक्र और उस के अर्थों और मतलब में विचार के साथ करना, जो व्यक्ति अल्लाह की किताब पर अमल करता है और उस की ओर ध्यान देता है तो उस के दिल में अल्लाह की मुहब्बत बैठ जाती है।

2- फर्ज़ नमाज़ों के बाद नफल नमाज़ के ज़रिये अल्लाह की निकटता प्राप्त करना।

«मेरा बंदा नफलों के ज़रिये मेरी निकटता ढूँडता रहता है यहाँ तक कि मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ और जब मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं उस का वह कान हो जाता हूँ जिस से वह सुनता है और उस की आँख हो जाता हूँ जिस से वह देखता है और उस का हाथ हो जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है और उस का पैर बन जाता हूँ जिस से वह चलता है, और अगर वह मुझ से माँगे तो मैं अवश्य दूँगा, और अगर वह मेरी पनाह माँगे तो अवश्य मैं उसे पनाह दूँगा।» (हदीसे कुदसी, बुखारी)

3- जुबान, दिल और अमल से हर समय हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करना।

4- जिन चीज़ों को अल्लाह पसंद करता है उन्हें नफस की इच्छाओं और हवस पर तरजीह देना।

{अल्लाह उन से प्रेम करता है और वह अल्लाह से प्रेम करते हैं।} [अल माइदा: 54].

5- दिल का अल्लाह तआला के नामों, उस की विशेषताओं का पढ़ना और मुताला करना अथवा उस के विषय में जानकारी प्राप्त करना।

6- अल्लाह तआला की भलाई, उस का एहसान, और उस की ज़ाहिरी और छिपी हुयी नेमतों को देखना।

7- पूर्ण प्रकार से दिल को अल्लाह के दानों हाथों के बीच विनय कर देना।



8- रात की अंतिम तिहाई में जब हमारा पालनहार निचले आसमान पर उतरता है उस समय अल्लाह तआला के साथ एकांत में होना,अल्लाह तआला के साथ तनहाई में उस से गुप्तवार्ता (सरगोशी) करे,उस की किताब की तिलावत करे और अदब के साथ खड़े हो कर नमाज़ पढ़े फिर तोबा और क्षमा माँग कर उसे संपन्न करे।

9- (अल्लाह से) मुहब्बत करने वाले और सच्यों के संग बैठना,और उन की अच्छी बातों को ऐसे चुन लेना जैसे अच्छे फलों को चुन कर ले लिया जाता है,और उन के बीच चुप रहना,हाँ जब बोलने की आवश्यकता हो और यह स्पष्ट हो जाये कि यहाँ अधिक की गुन्जाइश और इस में लोगों के लिये लाभ है।

10- हर उन कारणों से दूर रहना जो दिल और अल्लाह के बीच आड़े आयें।

जब अल्लाह तआला बंदे से मुहब्बत करता है तो उस से बंदे को क्या लाभ मिलते हैं:

जिस व्यक्ति से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है उसे हिदायत देता है और उसे अपने करीब करता है,नबी ﷺ ने फरमाया: «अल्लाह तआला फरमाता है: मैं अपने बंदे के साथ उस के गुमान अनुसार मामला करता हूँ,जब वह मुझे याद करता है तो मैं उस के साथ होता हूँ,अगर वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उस को अपने दिल में याद करता हूँ,और अगर वह भरी जमात में याद करता है तो मैं उस से उत्तम जमात में याद करता हूँ,अगर वह मुझ से एक बालिशत करीब होता है तो मैं उस से एक हाथ करीब होता हूँ और अगर वह मुझ से एक हाथ बराबर करीब होता है तो मैं उस से एक मीटर के बराबर करीब होता हूँ,और अगर वह मेरे पास चल कर आता है तो मैं उस के पास दौड़ते हुये चला आता हूँ» (बुखारी).

जब जब बंदा अपने रब से डरेगा अधिक हिदायत की ओर आगे बढ़ेगा,और जब जब अल्लाह तआला उस से प्रेम करेगा उस की हिदायत में बढ़ोतरी करेगा,और जब उसे हिदायत मिल जायेगी तो उस की परहेज़गारी भी बढ़ जायेगी।

जिस व्यक्ति से अल्लाह तआला प्रेम करता है धरती पर वह मक़बूल हो जाता है:

अर्थात जिस बंदे से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है वह लोगों में मक़बूल हो जाता है, लोग उस की ओर झुकते हैं,उस से प्रसन्न होते हैं, उस की प्रशंसा करते हैं,और काफिर के अतिरिक्त हर एक चीज़ उस से प्रेम करती है,क्योंकि वह अल्लाह ही से मुहब्बत नहीं करता तो वह अल्लाह के चहेतों से कैसे मुहब्बत करेगा?!रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: «अल्लाह तआला जब किसी बंदे से प्रेम करता है तो जिब्रील को बुलाता है,और कहता है: मैं फलाने से प्रेम करता हूँ तुम भी उस से प्रेम करो,फरमाया: कि जिब्रील उस से मुहब्बत करने लगते हैं फिर वह आसमान में पुकार के कहते हैं: बेशक अल्लाह तआला फलाने से प्रेम करते हैं तुम भी उस से प्रेम करो,पस आसमान वाले उस से प्रेम करने लगते हैं,फरमाया: कि फिर धरती में उस के लिये मक़बूल (प्रिय) होना लिख दिया जाता है।» (मुस्लिम),

इसी प्रकार जब अल्लाह तआला किसी से प्रेम करता है तो उस की अच्छी तरह से देख भाल करता है,और हर चीज़ को अपनी पैरवी बना देता है,उस के लिये हर कठिनाई सरल कर देता है और दूर को करीब कर देता है,और उस पर दुनियावी मामलों को आसान बना देता है जिस की वजह से वह थकावट और परेशानी महसूस नहीं करता,अल्लाह तआला ने फरमाया: {बेशक जो ईमान लाये हैं और जिन्होंने नेक अमल किया है उन के लिये अल्लाह रहमान मुहब्बत पैदा कर देगा"}[मरयम: 96].

जिस से अल्लाह तआला प्रेम करता है अपनी संगति उस के साथ कर देता है: जब अल्लाह तआला बंदे से मुहब्बत करता है तो वह उस के साथ होता है उस की हिफाज़त करता है और उस की देख रेख करता है और किसी ऐसे व्यक्ति को मुसल्लत नहीं करता जो उसे तकलीफ या उसे नुक़सान पहुँचाये,और हदीसे कुदसी में है,रसूलﷺ ने फरमाया: «बेशक अल्लाह तआला ने फरमाया: जो मेरे महबूब से दुश्मनी करे मैं उस के संग युद्ध छेड़ देता हूँ,फ़ाइज़ के अतिरिक्त मेरी प्रिय चीज़ों में से «किसी एक चीज़ के जरिये जब बंदा मेरी निकटता प्राप्त करता है तो उस से अधिक प्रिय मेरे लिये कोई चीज़ नहीं है,मेरे बंदे नवाफिल के जरिये मेरी निकटता प्राप्त करने की कोशिश में लगा रहता है यहाँ तक कि मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ,और जब मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं उस का वह कान बन जाता हूँ जिस से वह सुनता है,वह आँख बन जाता हूँ जिस से वह देखता है,वह हाथ बन जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है और वह पैर बन जाता हूँ जिस से वह चलता है,अगर मुझ से माँगता है तो मैं उसे देता हूँ,और अगर मुझ से पनाह माँगता है तो मैं उस का अपनी पनाह में ले लेता हूँ,और मैं अपने फ़ैसलों में से किसी भी चीज़ के करने उतना आगे पीछे नहीं होता जिस कदर मोमिन बंदे की रूह निकालने में होता हूँ,क्योंकि वह मौत को अप्रिय रखता है,और मुझे उस को कष्ट पहुँचाना नापसंद है» (बुखारी)

सच्चे ईमान में खुशियों का जीवन और अधिक प्रसन्नतायें हैं,जैसे अल्लाह के साथ कुफ़्र में रूहों की मौत है और दुख ही दुख है।

जिस से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है उस की प्रार्थना स्वीकारता है: अपने मोमिन बंदों से अल्लाह की मुहब्बत की दलीलों में से एक दलील यह है कि अल्लाह तआला उन की दलीलों को क़बूल करता है और जब वे आकाश की ओर हाथ उठा कर कहते हैं: हे हमारे रब तो उन पर अपनी नेमतों की वर्षा करता है। अल्लाह तआला ने फरमाया: {और जब मेरे बंदे मेरे बारे में आप से सवाल करें तो कहदें कि मैं बहुत की करीब हूँ,हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी भी वह मुझे पुकारे मैं क़बूल करता हूँ,इस लिये लोगों को भी चाहिये कि वे मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान रखें,यह उन की भलाई का कारण है"}।

[अल बकरा: 186]

और सलमान फारसी رضي الله عنه से रिवायत है,कहते हैं: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: «निःसंदेह अल्लाह तआला जीवित दाता है,जब बंदा उस की ओर अपने दोनों हाथ उठा कर माँगता है तो उन्हें खाली वापिस करने से वह लजाता है।» (त्रिमिज़ी).

जब अल्लाह तआला किसी बंदे से मुहब्बत करता है तो फरिश्तों को मुतय्यन कर देता है कि उस के लिये अल्लाह से क्षमा माँगें,फरिश्ते उस के लिये अल्लाह तआला से क्षमा माँगते हैं जिस से अल्लाह तआला मुहब्बत करता है और फरिश्ते उस के लिये अल्लाह तआला से दया माँगते हैं,अल्लाह तआला फरमाता है: {अर्थ के उठाने वाले और उस के आस पास के फरिश्ते अपने रब की तस्बीह तारीफ के साथ करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिये इस्तिगफार करते हैं,कि हमारे रब तू ने हर चीज़ को अपनी दया और जान से घेर रखा है तो तू उन्हें माफ कर दे जो माफी माँगे और तेरे रास्ते की पैरवी करे और तू उन्हें नरक के अज़ाब से भी सुरक्षित रख"}।[ग़ाफ़िर: 7].

और अल्लाह तआला फरमाता है: {क़रीब है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़े और सारे फरिश्ते अपने रब की तस्बीह अपने रब की प्रशंसा के साथ बयान कर रहे हैं और धरती वालों के लिये क्षमा याचना कर रहे हैं, खूब समझ रखों कि अल्लाह ही माफ करने वाला और दया करने वाला है"} [अश्शूरा: 5].

जब अल्लाह तआला किसी बंदे से प्रेम करता है तो उसे नेक काम पर जमा देता है: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: «जब अल्लाह तआला किसी बंदे के साथ भलाई का इरादा करता है तो उसे लोगों में प्रिय बना देता है, पूछा गया प्रिय बना देता है इस का क्या अर्थ ? फरमाया: अल्लाह तआला उस की मौत से पहले उस पर भलाई के कामों को सरल कर देता है, फिर उस पर उसे जमाये रखता है।» (अहमद).

जब अल्लाह तआला किसी बंदे से प्रेम करता है तो मरते समय उस की सुरक्षा करता है:

जब अल्लाह तआला किसी बंदे से प्रेम करता है तो मरते समय उस की सुरक्षा करता है और मरते समय उसे शांति प्रदान करता है और उसे हक़ पर जमाये रखता है, अल्लाह तआला अपने फरिश्तों को उस के पास भेजता है जो उस की जान को सरलता से निकालते हैं और मौत के समय उसे (ईमान पर) जमाये रखते हैं और उसे जन्नत की खुशखबरी सुनाते हैं, अल्लाह तआला ने फरमाया: {बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उसी पर जमे रहे उन के पास फरिश्ते आते हैं कि तुम कुछ भी भयभीत और दुखी न हो उस जन्नत की खुशखबरी सुन लो जिस का तुम से वादा दिया गया है"} [फुत्सिलत: 30].

जब अल्लाह तआला अपने बंदे से प्रेम करेगा तो उसे हमेशा जन्नत में रखेगा:

जिस से अल्लाह तआला प्रेम करेगा उसे प्रलोक में अपनी जन्नत में रखेगा, जिस से अल्लाह तआला प्रेम करता है उस की उदारता उस पर इस प्रकार होगी जिस के विषय में कोई सोच भी नहीं सकता और न किसी के दिल में वह चीज़ आसकती है, अल्लाह तआला जिन से प्रेम करता है उन के लिये ऐसी जन्नत का वादा किया है जिस में वह सब होंगी जिस की लोग इच्छा करेंगे, जैसा कि हदीसे कुदसी में है, नबी ﷺ ने फरमाया: «अल्लाह तआला ने कहा: मैं ने अपने नेक बंदों के लिये ऐसी चीज़ें तय्यार की हैं जिन्हें न तो किसी आँख ने देखी होगी और न किसी कान ने सुना होगा और न ही किसी आदमी के दिल में खयाल आया होगा, अगर चाहो तो यह (कुरआन की आयत) पढ़ ला» {कोई पराणी नहीं जानता जो कुछ हम ने उन की आँखों की ठंडक उन के लिये छिपा रखी है"} [बुखारी].

दुनिया में मज़ा नहीं मिल सकता मगर अल्लाह तआला की मुहब्बत और उस की पैरवी कर के, और न ही जन्नत में मज़ा मिल सकता है मगर अल्लाह तआला के दीदार से और उसे देख कर के।

अल्लाह तआला का बंदे से मुहब्बत करने के फलों में से एक फल बंदे का अल्लाह तआला को (स्वर्ग में) देखना है:

अल्लाह तआला अपने जिन बंदों से मुहब्बत करता है उन के सामने अपना नूर प्रकट करके ज़ाहिर होगा, तो लोगों ने उस से उत्तम कोई चीज़ देखी ही न होगी, जैसा कि रिवायत में है कि नबी ﷺ ने चैदहवी की चाँद की ओर देख कर फरमाया:



«निःसंदेह तुम अपने रब को उसी प्रकार देखोगे जैसे तुम इस चाँद को देख रहे हो,तुम्हें उस के देखने में कोई परेशानी नहीं होगी,अगर तुम इस की ताकत रख सको कि सूरज निकलने और सूरज डूबने से पहले वाली नमाज़ों को फौत होने न दो तो अवश्य ऐसा करो अर्थात इन नमाज़ों को न छोड़ो,फिर आप ﷺ ने कुरआन की ये आयत पढ़ी):
(और अपने रब की पविन्नतागान तारीफ के साथ सूरज निकलने से पहले भी और डूबने से पहले भी करें।) (बुखारी).

मुहब्बत के विषय में नियम और अलर्ट:

1- अल्लाह तआला का किसी बंदे से प्रेम करने का यह अर्थ नहीं है कि उस पर मुसीबतें और आजमाइशें नहीं आयेंगी: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: «निःसंदेह बड़ा बदला बड़ी आजमाइश से मिलता है,और जब अल्लाह तआला किसी बंदे से मुहब्बत करता है तो उन्हें आजमाता है,तो जो प्रसन्न हुआ उस के लिये प्रसन्नता है और जो नाराज़ हुआ उस के लिये अप्रसन्नता है।» (त्रिमिज़ी)

अल्लाह तआला बंदे को अनेक प्रकार की आजमाइशों में डालता है ताकि उसे गुनाहों से पाक साफ कर दे और उस के दिल को दुनियावी कामों से खाली कर दे,अल्लाह तआला ने कहा: {“और बेशक हम तुम्हारी परिक्षा लेंगे ताकि तुम में से जिहाद करने वालों और सब्र करने वालों को देख लें,और तुम्हारी हालतों की भी जाँच कर लें“। [मुहम्मद: 31].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {और हम किसी न किसी तरह तुम्हारा इम्तेहान जरूर लेंगे,दुश्मन के डर से,भूक प्यास से,माल व जान,और फलों की कमी से,और सब्र करने वालों को खुशखबरी दे दीजिये,उन्हें जब कभी भी कोई कठिनाई आती है तो कहा करते हैं कि हम तो खुद अल्लाह के लिये हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं,यही हैं जिन पर उन के रब की रहमत और नवाज़िशें हैं और यही लोग सच्चे रास्ते पर हैं“। [अल बकरा: 155-157].

2- बंदा जब अपने रब की नाफरमानी करता है तो मुहब्बत में कमी आ जाती है,और उस की पूर्णता खतम हो जाती है,ईमान की तरह मुहब्बत की असल और पूर्णता है,गुनाहों के एतबार से पूर्णता में कमी आती है,और जब बंदा संदेह और बड़े कपटाचार (नेफाक) के दायरे में आ जाता है तो असल चली जाती है, बल्कि पूर्ण रूप से खतम हो जाती है,तो जिस के दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत नहीं होगी वह व्यक्ति काफिर,मुर्तद और पक्का मुनाफिक होगा,दीन में उस का कुछ हिस्सा बाकी नहीं रह जायेगा,अलबयाँ गुनहगारों के विषय में यह नहीं कहा जायेगा कि उन के अन्दर अल्लाह की मुहब्बत नहीं है बल्कि यह कहा जायेगा कि इन के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत अधूरी है,इसी को देखते हुये उन से मामला भी किया जायेगा,नबी ﷺ ने फरमाया: «यदि तुम गुनाह नहीं करोगे तो अल्लाह तआला ऐसी क्रौम को पैदा करेगा जो गुनाह करेंगे फिर अल्लाह तआला उन्हें क्षमा करेगा।» (मुस्नदे अहमद)

3- अल्लाह तआला की मुहब्बत उस प्राकृतिक मुहब्बत के विपरित नहीं है जिस की ओर नफस का झुकाव होता है जैसे खाना पीना,महिलायें अदि,नबी ﷺ ने फरमाया: «मेरे लिये दुनिया की दो चीज़ें महिलायें और खुशबू प्रिय बना दी गई हैं।» (अहमद),

“असली आजादी दिल की है जो शिर्क और इच्छाओं अथवा संदेह से आजाद हो,और असल बंदगी दिल की बंदगी है”

तो यहाँ दुनिया में कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन की मुहब्बत शिर्क नहीं है,क्योंकि नबी ﷺ ने उन से मुहब्बत की है,इस लिये इन्सान के लिये जायज़ है कि वह दुनियावी चीज़ों से मुहब्बत करे जब तक कि वे चीज़ें हराम न हों।



4- जिसने किसी से अल्लाह जैसी मुहब्बत की उस ने शिर्क किया,अल्लाह तआला फरमाता है: {और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहरा कर उन से ऐसे प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिये और ईमान वाले अल्लाह से प्रेम में सख्त होते हैं,काश कि मूर्तिपूजक जानते जब कि अल्लाह के अज़ाबों को देख कर सभी ताक़त अल्लाह ही को है और अल्लाह सख्त अज़ाब देने वाला है"}[अल बक्रा: 165].

नबी ﷺ ने फरमाया: «निःसंदेह अल्लाह के निकट सब से प्रिय कार्य अल्लाह के लिये मुहब्बत करना और अल्लाह के लिये नफरत करना है»(अहमद).

और आयत में उस व्यक्ति के लिये सख्त धमकी है जिस का किसी से मुहब्बत करना इबादत और सम्मान के एतबार से अल्लाह की तरह हो,

अल्लाह तआला ने फरमाया: {कह दीजिये कि अगर तुम्हारे बाप,तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे वंश और कमाया धन और वह तिजारत जिस की कमी से तुम डरते हो और वे घर जिन्हें तुम प्यारा रखते हो यह तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद से अधिक प्यारे हैं,तो तुम इन्तेज़ार करो कि अल्लाह तआला अपना अज़ाब ले आये"}[अय्योबा: 24].

और आयत में उस व्यक्ति के लिये सख्त धमकी है जिस के निकट ये आठ चीज़ें अल्लाह तआला से अधिक प्रिय हों,और अनस ﷺ से रिवायत है रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: «तुम में से से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के निकट उस की अवलाद,उस के बाप और सब लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ» (इब्ने माजा).

5- मोमिनों को छोड़ कर मुश्रिकों के प्रति वफादारी और प्यार जताना यह अल्लाह की मुहब्बत के विपरित है: मुश्रिक के शिर्क और उस के (झूटे) दीन के कारण,अल्लाह के लिये मुहब्बत करना और अल्लाह के लिये नफरत करना ईमान का महान तथ्य (असल) है,अल्लाह तआला ने फरमाया: {मोमिनों को चाहिये कि ईमान वालों को छोड़ कर काफिरों को अपना दोस्त न बनायें,और जो ऐसा करेगा वह अल्लाह की किसी पक्ष में नहीं,लेकिन यह कि उन के किसी तरह की हिफाज़त का इरादा हो"}[आले इमरान: 28].

अल्लाह तआला ने मोमिनों को काफिरों के संग सहकारिता (मुवालात) से मना किया है और यह स्पष्ट किया है कि जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह तआला की मिन्नता से कुछ नहीं मिलेगा,मिन्न से सहकारिता और दुश्मन से भी सहकारिता दोनों एक दूसरे के विपरित हैं: {लेकिन यह कि उन के किसी तरह की हिफाज़त का इरादा हो"}[आले इमरान: 28].

और अल्लाह तआला ने उन से सहकारिता की अनुमति दी है जब कि इस बात का डर हो कि बिना सहकारिता के वे मुसलमानों को ठीक से रहने नहीं देंगे,तो उस समय ज़ाहिरी तौर पर उन से घुल मिल जाना जायज़ है जब कि दिल ईमान और काफिरों



की घृणा से संतुष्ट हो,जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया: {उस के सिवाय जिसे मजबूर किया जाये और उस का दिल ईमान पर कायम हो"।}

[अन्नहल: 106].

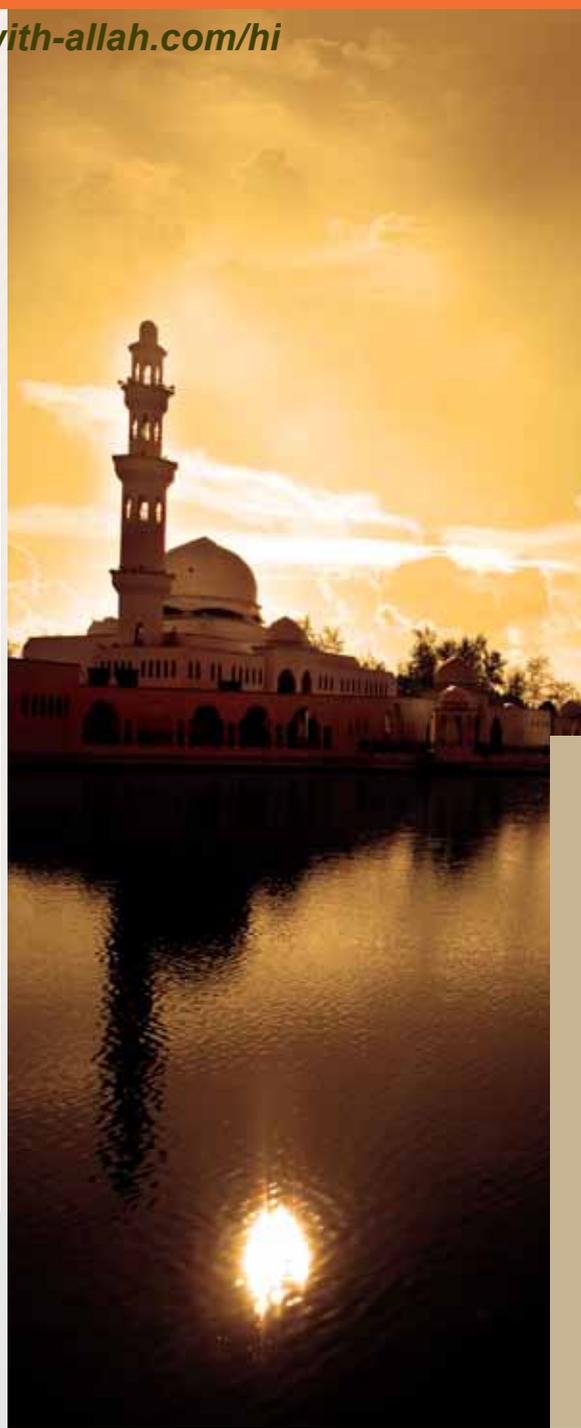
प्यार की चमक

जब हमारे नबी को दुनियावी जीवन और अल्लाह तआला से मुलाकात के बीच चुनने को कहा गया तो आप ने फरमाया: «बल्कि मुझे तो ऊपर वाले रफीक (अल्लाह तआला) से मिलना है» (अहमद),

आप ने अल्लाह तआला की मुहब्बत और उस की मुलाकात को चुना और उसे प्रमुखता दी और दुनिया की हवस,आराम और उस की लज्जतों की मुहब्बत पर मुकद्दम किया।

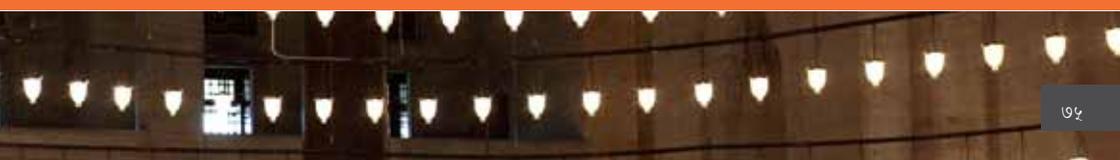
अल्लाह तआला की मुहब्बत की निशानियों में से उस का अधिकतर जिक्र करना और उस से मिलने की इच्छा करना,जो किसी से मुहब्बत करता है उसे अधिकतर याद करता है और उस से मिलने को पसंद करता है ।

अल रुबय्य बिन अनस



समीक्षा:

- 1- मुहब्बत किसे कहते हैं?
- 2- अल्लाह तआला से मुहब्बत का जो प्रभाव आप पर और आप के जीवन पर हुआ है उसे गिनाइये.
- 3- क्या यह संभव है कि बिना अल्लाह तआला से डर और आशा के केवल उस की इबादत उस से प्रेम कर के की जाये ? जो भी कहें उस पर पैगम्बरों के अमल से दलील दें.
- 4- जब अल्लाह तआला बंदे से प्रेम करे तो क्या प्राप्त होगा?
- 5- अल्लाह तआला के नामों,उस की विशेषताओं और उस की मुहब्बत के बीच संबंधों के विषय में जो कुछ आप जानते हैं उस की व्याख्या कीजिये।



2-आशा:

नबी ने फरमाया: "सरलता पैदा करो कठिनाई में न डालो, खुशखबरी सुनाओ न फैलाओ" (बुखारी)

उस(आशा) का अर्थ

आशा अर्थात:

अल्लाह तआला के वजूद,उस की कृपा,उस की दया को महसूस करना,उस की उदारता और उस के एहसानात से खुश होना और उस पर भरोसा करना,वह उभारने वाला है दिलों को अल्लाह और उस की जन्नत की ओर उभारता है,अल्लाह तआला ने फरमाया: {और जो भी कोई बुराई करे या खुद अपने ऊपर जुल्म करे,फिर अल्लाह से क्षमा माँगे तो अल्लाह को क्षमा करने वाला,दया करने वाला पायेगा"}।

[अन्निसा: 110].

आशा की किस्में:

आशा तीन प्रकार के हैं,उन में दो अच्छे हैं और एक बुरा और धोका है:

1- उस व्यक्ति की आशा जो अल्लाह की रोशनी में अल्लाह की पैरवी करे,वह अल्लाह के फल (सवाब) की आशा करे।

2- उस व्यक्ति की आशा जो गुनाह करके तोबा करले,वह अल्लाह तआला से क्षमा,गुनाहों के मिटाने,उसे दरगुज़र करने और उसे छुपाने की आशा करे।

3- उस व्यक्ति की आशा जो कोताही,बुराई और गुनाहों में हद से बढ़ जाये और बिना अमल के अपने रब की दया और क्षमा की आशा करे!! यह धोका,तमन्ना,और झूठी आशा है इसे कभी भी अच्छी उम्मीद नहीं कह सकते,और मोमिनों की उम्मीद केवल उम्मीद नहीं है बल्कि उस में अमल मिला हुआ है,अल्लाह तआला ने फरमाया: {बेशक जिन्होंने ईमान क़बूल किया और हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया वही अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं,और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला और रहम करने वाला है"}।[अल बकरा: 218].

आशा के दरजे:

आशा के अनेक दरजे और मरतबे हैं जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के लिये ऊँचे और बुलंद होते हैं और यह मरतबे इस प्रकार हैं:

1. ऐसी आशा जो इबादत में प्रयास करने पर उभारेऔर इबादत करने वाले के दिल में आनंद पैदा करेएअगरचे वह इबादत कठिन और मुश्किल ही क्यों न हो जिस की वजह से वह गुनाहों और बुराइयों से बचे।

2. मेहनती लोगों की आशा उन चीज़ों के छोड़ने में जिन से उन के नफ्स मानूस हैंएऔर जो उन की

आदत में से हैं,और उन्हें उन चीज़ों से फेर दें जो उन के रब और उन के पैदा करने वाले को प्रिय हैं,और (उन चीज़ों को अपनायें) जो उन के दिलों को अल्लाह तआला के लिये एकजुट करदें।

3-दिलों के रब की आशा करना: अर्थात पैदा करने वाले से मिलने की आशा,जो अल्लाह तआला से मिलने और केवल उसी से दिली लगाव रखने पर उभारे,यह आशा सब से बेहतर और सर्वाच्च प्रकार की आशा है,अल्लाह तआला ने फरमाया: {तो जिसे भी अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेकी के काम करे और अपने रब की इबादत में किसी को भी शरीक न करे"}।[अल कहफ: 110].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो तो अल्लाह का मुकरर किया हुआ समय जरूर आने वाला है,और वह सुनने वाला सब कुछ जानने वाला है"}।
[अल अनकबूत: 5].

जिसे किसी चीज़ की आशा होगी वह उसे माँगेगा।

आशा का तअल्लुक अल्लाह तआला,उस के नामों और उस की विशेषताओं से है:

आशा करने वाला व्यक्ति (अल्लाह तआला) की आज्ञापालन पर पाबंदी करेगा,ईमान के तकाज़ों पर अमल करेगा,वह अल्लाह तआला से इस बात की उम्मीद रखेगा कि वह उसे न भटकाये, और उस के अमल को कबूल करे, उसे रद्दी की टोकरी में न डाले,और उस के अज़्रो सवाब को कई गुना बढ़ाये,तो बंदा उन जरियों को ढूँडता है जिन की वह शक्ति रखता है,वह अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं के ज्ञान की उम्मीद करता है,वह ये जानता है कि उस का मामला उस दया करने वाले के साथ है जो

प्रेम करने वाला,आभारी,करम करने वाला,अधिक देने वाला,क्षमा करने वाला और नरमी करने वाला है,तो ये इस दुनिया में भयभीत है पर सर्वशक्तिमान रब से मुलाकात के समय सेफटी की आशा करता है।

आशा के फल:

1- आशा उम्मीद करने वाले के भीतर अच्छे कर्मों और नेक अमल के प्रयास को बढ़ाता है।

2- आशा करने वाला व्यक्ति नेकी के कामों पर पाबंदी करता है,हालात चाहे जिस प्रकार बदल जायें अथवा तंग हो जायें।

3- आशा करने वाला व्यक्ति अल्लाह की ओर मुतवज्जेह होता है,उस से सरगोशी करता है,और माँगने में नरमी दिखाता और गिड़गिड़ाता है।

4- आशा करने वाला व्यक्ति बंदगी,निर्धनता और अल्लाह तआला के समीप आवश्यकता को ज़ाहिर करता है,और वह अल्लाह तआला के फज़ल और उस के एहसान से पलक झपकने के बराबर भी बेनियाज़ नहीं होता।

5- आशा करने वाले व्यक्ति को अल्लाह तआला के वजूद और उस की उदारता का यकीन होता है,अल्लाह तआला सब से अधिक दानी और अधिकतर देने वाला है,वह इस बात को पसंद करता है कि उस के बंदे उस से गिड़गिड़ा कर माँगें,और उस से आशा रखें।

6- आशा बंदे को अल्लाह तआला की मुहब्बत की चैखट पर डाल कर उसे मुहब्बत के कमाल (पूर्णता) तक पहुँचा देती है,जब जब उस की आशा बढ़ेगी और जिस की वह आशा रखता है उसे मिल जायेगी तो अपने रब के लिये उस की मुहब्बत,शुक्र और प्रसन्नता में बढ़ोतरी हो जायेगी,और ये बंदगी के तकाज़ों और उस के अर्कान में से है।

आशा करने वाला हमेशा अल्लाह तआला से उम्मीद करता है, उस से डरता है और अल्लाह तआला के साथ अच्छा गुमान करते हुये अपने रब की कृपा की उम्मीद रखता है।

मोमिन ने अपने रब के साथ अच्छा गुमान किया तो उस ने अच्छा अमल भी किया, और धर्मभ्रष्ट ने अपने रब के साथ बुरा गुमान किया तो उसने बुरा अमल भी किया।

आप की जानकारी के लिये, अल्लाह तआला के साथ अच्छा गुमान करने में से है कि अल्लाह तआला उसे बर्बाद नहीं होने देगा जो उस की ओर पनाह ढूँडेगा।

7- आशा बंदे को अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के लिये उभारती है, क्योंकि नेमतों के कारण शुक्र अदा करने का जो हक बनता है उस की ओर ये प्रेरित करती है और यही बंदगी का सारंश (खुलासा) है।

8- अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त होता है, अल्लाह तआला दया करने वाला, करम करने वाला, दानशील, कबूल करने वाला, सुन्दर और बेनियाज़ है, अल्लाह की जात पविन्न और अधिकतर महान है।

9- आशा उस चीज़ की प्राप्ति का कारण है जिसे बंदा हासिल करना चाहता है, और मतलूब के प्राप्त होने से बंदे का हौसला बढ़ता है, अथवा उसे अधिक माँगने और अल्लाह की ओर मुतवज्जेह होने पर सहायता मिलती है, इस प्रकार हमेशा बंदे के ईमान में बढ़ोतरी होती रहती है और वह अल्लाह का करीबी बन जाता है।

10- क़यामत के दिन मोमिन उन चीज़ों के हासिल होने से खुश होंगे जिस की वे उम्मीद करते

हैं जैसे अल्लाह की प्रसन्नता, स्वर्ग, और उस का दीदार, और यह सब बंदों की उम्मीद और अल्लाह से डरने के बक़दर होगा।

आशा के अहकाम और उस पर चेतावनियाँ:

1- मोमिन के निकट डर आशा को और आशा डर को अनिवार्य करेगा (मुस्तलज़म) है, इसी लिये ऐसी जगहों में आशा करना अच्छा समझा जाता है जहाँ पर डर का पाया जाना अच्छा समझा जाता है:

{तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्ला की बरतरी पर यकीन नहीं करते} [नूह: 13].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: ﴿”ईमान वालों से कह दें कि वह उन लोगों को क्षमा कर दिया करें जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते”} [अल ज़सिया: 14].

अर्थात् अपने ऊपर आने वाले अल्लाह के अज़ाब से नहीं डरते जैसा कि इन से पहली उम्मतों में अज़ाब आया और उन्हें हलाक और बर्बाद कर दिया गया।

2- आशा दवा है हम उस समय उस के मुहताज़ होते हैं जब:

- जब नफ़सों पर मायूसी छा जाये फिर इबादत को छोड़ दिया जाये।

- जब आदमी पर इस क़दर डर ग़ालिब हो जाये कि वह स्वयं को और अपने घर वालों को हानि पहुँचाने लगे, अर्थात् उस का डर शरई हद को पार कर जाये, तो उस समय उसे बदलने की और एक ऐसी चीज़ की आवश्यकता है जो उसे संतुलित (मोतदिल) करे और वह आशा है जो मोमिन की सामान्य स्थिति होती है।

3- आशा मायूसी की विपरित है, और मायूसी

कहते हैं अल्लाह की रहमत के छूट जाने को याद किया जाये,और फिर अल्लाह तआला से ये नेमत माँगने में दिली तौर से न तलब किया जाये, नाउम्मीदी गुमराही और कुफ्र का कारण होती है, अल्लाह तआला फरमाता है: {और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो,बेशक अल्लाह की रहमत से वही मायूस होते हैं जो काफिर होते हैं"}[यूसुफ: 87].

<https://www.with-allah.com/hi>



अगर तारजू लाया जाये और मोमिन के डर और आशा को तौला जाये तो दोनों बराबर होंगे।

eमें इस बात को पसंद नहीं करता कि मेरा हिसाब मेरे पिता लें,मेरा रब मेरे पिता से बेहतर है

इमाम सुफयान सौरी

इबादत बिना डर और उम्मीद के पूरी नहीं हो सकती,डर के कारण मना की हुयी चीज़ों से रुकेगा और आशा के कारण अधिकतर अच्छा कर्म करेगा।

इमाम इब्ने कसीर:

समीक्षा:

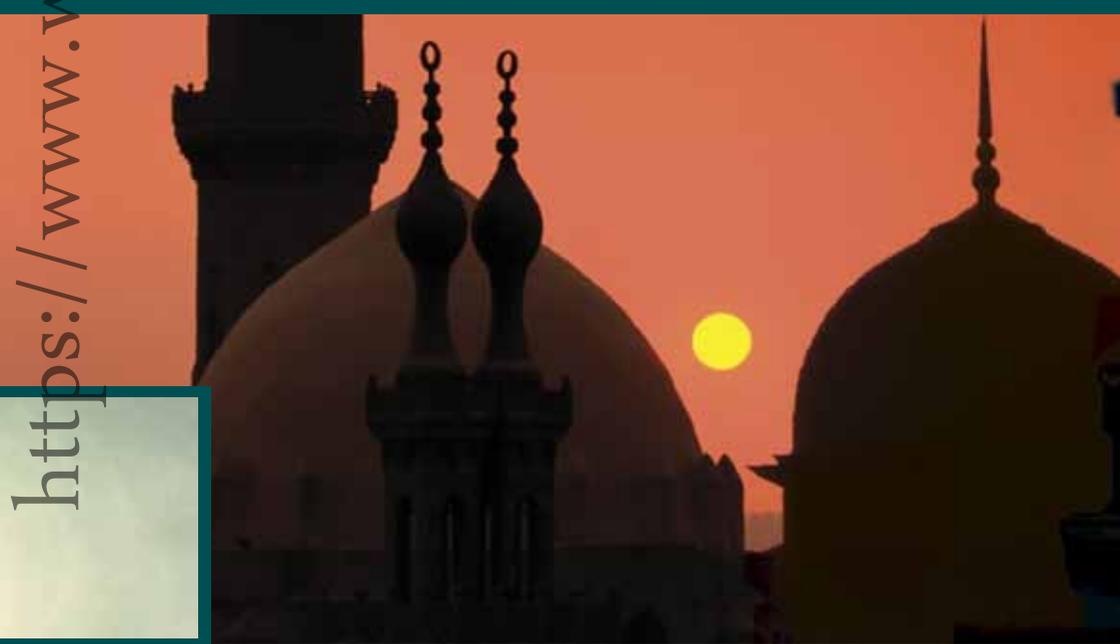
1- क्या अल्लाह से उम्मीद करना अमल की ओर ले जाता है? इस विषय में अल्लाह तआला के इस कथन की रोशनी में बयान करें:

”तो जिसे भी अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेकी के काम करे और अपने रब की इबादत में किसी को भी शरीक न करे“।

{अल कहफ: 110}.

2- क्या अल्लाह तआला से आशा करने का अर्थ उस से न डरना है?या उस से डरने से लाज़िम आता है कि उस से आशा न की जाये?

3- अल्लाह तआला के उन नामों और विशेषताओं को बयान कीजिये जो अल्लाह तआला से आशा करने को अनिवार्य करती हैं।



3) डर:

“और अल्लाह तआला अपने आप से डरा रहा है”। {आले इमरान: 30}.

इस का अर्थ

अल्लाह तआला से डरने का अर्थ महान दिली इबादतें हैं,अल्लाह तआला ने फरमाया: {यह शैतान ही है जो अपने दोस्तों से डराता है,इस लिये तुम उन से न डरो और मुझ से ही डरो अगर तुम ईमान वाले हो“।}{आले इमरान: 175}.

और इस आयत करीमा में अकेले अल्लाह तआला से डरने की अनिवार्यता है, और इस बात की ताकीद है कि यह ईमान के लिये आवश्यक है,तो जिस क़दर बंदे का ईमान होगा उसी क़दर वह अल्लाह तआला से डरेगा।

और मोमिनों की माँ आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा से रिवायत है,कहती हैं: «मैंने नबी ﷺ से इस आयत के विषय में पूछा: {और जो लोग देते हैं,जो कुछ देते हैं और उन के दिल काँपते हैं“।}{अल मुमिन्न: 18} क्या ये वह लोग हैं जो शराब पीते हैं और चोरी करते हैं?! फरमाया: नहीं ऐ सिद्दीक़ की बेटी,परन्तु ये वह लोग हैं जो रोज़ा रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं,सदका देते हैं और वह इस बात को लेकर भयभीत रहते हैं कि कहीं इन की ये इबातदतें क़बूल न की जायें।» (त्रिमिज़ी),

अल्लाह तआला से डरने के कारण (असबाब):

1- सर्वशक्तिमान अल्लाह की इज़ज़त और उस का सम्मान करना,क्योंकि उन्हें अल्ला तआला,उस के नामों और उस की विशेषताओं का ज्ञान है। {अपने रब से जो उन के ऊपर है कपकपाते रहते हैं“।}{अन्नहल: 50}.

2- इस बात से डरना कि कहीं उन का ठिकाना उस चीज़ की ओर न बने जिसे यह अप्रिय रखते हैं,जैसे नर्क़ का दुखदाई अज़ाब जो बुरा ठिकाना है।

3- उन वाजिबात को लेकर कोताही का एहसास करना जो उस के ऊपर हैं, इस बात को जानते हुये कि अल्लाह तआला सब कुछ जानता है,देखता है और उस पर शक्ति रखता है,गुनाह को इस निगाह से न देखें कि वह छोटा है बल्कि इस निगाह से देखें कि वह कितना महान है जिस की नाफरमानी की ज़ारही है।

4- अल्लाह तआला के उस कलाम में विचार करना जो वईद और धमकी से भरा हुआ है उस व्यक्ति के लिये जो अल्लाह की नाफरमानी करे, और उस की शरीअत से मुँह मोड़े,और उस रोशनी को छोड़ दे जिसे उस की ओर भेजा गया ।

5- अल्लाह तआला और उस के रसूल ﷺ के कलाम में विचार करना और उस के रसूल की सीरत में ग़ौरो फ़ि़र्र करना।

6- अल्लाह तआला की महानता में विचार करना,क्योंकि जो उस में विचार करेगा उसे अल्लाह तआला की विशेषताओं और उस की बड़ाई का ज्ञान होगा,और जिस का दिल अल्लाह तआला की महानता की गवाही देगा उसे अल्लाह तआला से डरने का एहसास हो जायेगा और निःसंदेह वह अल्लाह तआला से भयभीत रहेगा, अल्लाह तआला ने फरमाया: {और अल्लाह तआला अपने आप से डरा रहा है"} [आले इमरान: 28].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {और उन लोगों ने जैसा सम्मान अल्लाह का करना चाहिये था नहीं किया,सारी धरती कयामत के दिन उस की मुठी में होगी और सारा आकाश उस के दायें हाथ में लपेटे हुये होंगे"}[अज्जुमर: 67].

अल्लाह तआला से डरना उस के विषय में ज्ञान को अनिवार्य है,और उस के विषय में ज्ञान का होना उस से डरने को अनिवार्य (लाज़िम) है और उस से डरना उस की फरमाँबरदारी को लाज़िम है।

7- मौत और उस की सखती के विषय में विचार करना और इस बात का ज्ञान होना कि इस से किसी को छुटकारा नहीं है: {कह दीजिये कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह तो तुम तक ज़रूर पहुँचेगी"}[अल जुमा:8].तो यह अल्लाह तआला से डर को वाजिब करता है,नबी ﷺ ने फरमाया: «लज्ज़तों को चूर चूर करने वाली चीज़(मौत) को अधिकतर याद करो,क्योंकि किसी ने जीवन की तंगी में इसे याद नहीं किया मगर वह उस पर कुशादा हो गई,और जिस ने कुशादागी में याद किया उस पर तंग होगई» (तबरानी).

8- मरने के बाद,क़ब्र अथवा उस की हौलनाकी के विषय में विचार करना,नबी ﷺ ने फरमाया: «मैंने तुम्हें क़ब्रों की ज़्यारत से रोका था तुम उस की ज़्यारत करो क्योंकि ये तुम्हें दुनिया से बे रग़बत करती है और आखिरत की याद दिलाती है» (इब्ने माजा),

और हज़रत बुरा ﷺ से रिवायत है,कहते हैं: «हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ एक जनाज़े में थे,आप एक क़ब्र के किनारे बैठे,और आप रोने लगे यहाँ तक कि मिट्टी गीली हो गई,फिर फरमाया: ऐ मेरे भाइयो इस जैसी चीज़ के लिये तय्यारी कर लो» (इब्ने माजा),

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {ऐ लोगो अपने रब का भय रखो और उस दिन का भय रखो जिस दिन पिता अपने पुन्न को कोई लाभ न पहुँचा सकेगा और न पुन्न अपने पिता को तनिक भी लाभ पहुँचाने वाला होगा,याद रखो अल्लाह का वादा सच्चा है,देखो तुम्हें साँसारिक जीवन धोके में न डाले और न धोकेबाज़ तुम्हें धोके में डाल दे"}[लुकमान: 33].

9- छोटे छोटे गुनाहों के अंजाम के विषय में विचार करना जिसे लोग हकीर समझते हैं,जब कि नबी ﷺ ने उस की मिसाल एक ऐसे क़ौम से दी है जिन्होंने एक घाटी में पड़ाव डाला,उस के बाद एक व्यक्ति इस लकड़ी को ढूँड लाया और दूसरा दूसरी लकड़ी ले आया यहाँ तक कि उन के पास इतनी लकड़ी हो गई जिस से वे अपनी रोटी पका लें,और यहाँ पर लकड़ियों और आग जलाने और गुनाहों और उन चीज़ों के बीच सह-संबंध है जो गुनहगारों के चमड़ों के जलने का कारण बनेंगी: {जब उन की खालें (चर्म) पक जायेंगी"} [अन्निसा: 56].

10- बंदे को यह जान लेना चाहिये कि उस के और उस की तोबा के बीच अचानक मौत आइ बन सकती है,और उस समय अफसोस से कोई लाभ न होगा, अल्लाह तआला ने फरमाया: {यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मौत आने लगती है तो कहता है कि हे मेरे रब मुझे वापस लौटा दे"}[अल मूमिनून: 99].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {और तू उन्हें इस दुख और मायूसी के दिन का डर सुना दे"}[मरयम: 39].

11- बुरे अंत के बारे में विचार करना, अल्लाह तआला ने फरमाया: {फरिश्ते उन के मुंह और कमर पर मार मारते हैं"}[अल अनफाल: 50].

12- ऐसे लोगों के साथ बैठो जो तुम्हारे अन्दर अल्लाह का डर और खौफ बिठा दें, अल्लाह तआला ने फरमाया: {और अपने आप को उन्हीं के साथ रखा करें जो अपने रब को सुबह और शाम पुकारते हैं और उसी के मुंह की चाहना करते हैं"}[अल कहफ: 28].

अल्लाह तआला से डरना ये दो चीज़ों से संबंधित है:

क- उस के अज़ाब से डरना:

अर्थात जिन्हें उस के साथ शिर्क करने,उस की नाफरमानी करने और उस से डरने और फरमाँबरदारी से दूर हो जाने पर अज़ाब की धमकी दी है।

ख- अल्लाह तआला से डरना:

अर्थात ज्ञानियों और अल्लाह को पहचानने वालों का डर: {और अल्लाह तआला अपने आप से डरा रहा है"}[आले इमरान: 28].

और जब जब अल्लाह तआला का ज्ञान बढ़ेगा,उस का डर भी अधिक होगा,अल्लाह तआला ने फरमाया: {अल्लाह से उस के वही बंदे डरते हैं जो जानकार हैं"}[फातिर: 28].

क्योंकि जब वे अपने को और उस के नामों अथवा विशेषताओं को अच्छी तरह जान लेंगे तो वे डर को तरजीह देंगे अर्थात प्रभाव दिल पर होगा फिर उस का प्रभाव अंगों पर भी ज़ाहिर होगा।

जब डर दिलों में बस जायेगा तो दिल से उस की इच्छाओं को जला देगा और उस से दुनिया को दूर कर देगा।

अल्लाह तआला से डरने के फल:

क- दुनिया में

1-यह धरती में सशक्तिकरण और ईमान अथवा आत्मविश्वास के कारणों में से है क्योंकि जब आप को वह चीज़ मिल जायेगी जिस का आप से वादा किया गया है तो भरोसा अधिक बढ़ जायेगा, अल्लाह तआला ने फरमाया: {और काफिरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुम्हें देश से निकाल देंगे या तुम फिर से हमारे धर्म में लौट आओ,तो उन के रब ने उन की ओर वह्य भेजी कि हम उन ज़ालिमों का ही नाश कर देंगे,और उस के बाद हम खुद तुम्हें धरती पर बसायेंगे,यह है उन के लिये जो मेरे सामने खड़े होने से डर रखें और मेरी चेतावनी से डरते रहें"}[इब्राहीम: 13-14].



2- नेक अमल और उस में इखलास अथवा दुनिया में उस के बदले कुछ न लेने पर उभारेगा,जिस की वजह से प्रलोक में उस के सवाब में कुछ कमी न होगी,अल्लाह तआला ने फरमाया: {हम तो तुम्हें केवल अल्लाह की खुशी के लिये खिलाते हैं,तुम से न बदला चाहते हैं और न शुक्रिया,बेशक हम अपने रब से उस दिन का डर रखते हैं जो तंगी और कठोरता वाला होगा।}

[अल इन्सान: 9-10].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {उन घरों में जिन के ऊँचा करने का और वहाँ अपना नाम लिये जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है वहाँ सुबह और शाम अल्लाह की तस्बीह बयान करते हैं,ऐसे लोग जिन्हे तिजारत और खरीदो फरोख्त अल्लाह के जिक्र से और नमाज़ कायम करने और ज़कात अदा करने से गाफिल नहीं करती,उस दिन से डरते हैं जिस दिन बहुत से दिल और बहुत सी आँखें उलट पलट हो जायेंगी।}

[अन्नूर: 36].

अर्थात वह परेशान होगा और उलटे पलटेगा,यही वह चीज़ है जो उसे अमल के लिये प्रेरित करेगी,वे मुक्ति चाहते हैं,हलाक होने से घबराते हैं,और इस बात को लेकर डरे रहते हैं कि कहीं उन का कर्म पन्न (आमाल नामा) उन के बायें हाथ में न दे दिया जाये।

ख- प्रलोक में:

जो व्यक्ति अल्लाह तआला से डरेगा उसे अल्लाह का भय हर एक भलाई की ओर मार्ग दिखायेगा।

1- बंदा क़यामत के दिन अल्लाह तआला के अर्श की छाँव में होगा,रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: «और व्यक्ति जिसे हैसियत वाली महिला बुलाये(व्यभिचारकरना चाहे) और वह कहे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ..» (बुखारी),

और हदीस का ज़ाहिर ये बताता है कि वह अपनी जुबान से कहे ताकि महिला अपनी हरकत से बाज़ आ जाये और वह अपने जी में सोचे,और उस पर जमा रहे,और सिद्धांतों की घोषणा के बाद उस से न पलटे,



«और ऐसा व्यक्ति जिस ने अल्लाह तआला का अकेले में याद किया और उस की आँखों से आँसू निकल पड़े..» (बुखारी),

अल्लाह तआला का वह डर जो आँखों को आँसू निकालने पर मजबूर कर दे कयामत के दिन ऐसी आँख को आग छू भी नहीं सकेगी.

2-यह क्षमा के कारणों में से है,और नबी ﷺ की हदीस इस पर गवाह है:

«तुम से पहले एक आदमी था जिसे अल्लाह तआला ने धन दे रखा था,मरते समय उस ने अपने बेटों से कहा: मैं तुम्हारा कैसा बाप था?बेटों ने कहा अच्छे बाप थे,बाप ने कहा मैं ने कभी अच्छा काम नहीं किया,इस लिये जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला देना और अधिक बारीक कर देना फिर जब आँधी आये तो उस में मुझे उड़ा देना,उन्होंने ऐसा ही किया,फिर अल्लाह तआला ने उसे इकठा किया,पूछा ऐसा करने पर तुझे किस चीज़ ने उभारा,जबाब दिया तेरे डर ने,तो अल्लाह तआला उसे अपनी दया में लेलेगा अर्थात उसे क्षमा कर देगा!!» (बुखारी),

अल्लाह तआला ने उस की जेहालत के कारण उसे विवश (माजूर) समझा और उस के डर ने उस के रब से सिफारिश की,वरना तो जो व्यक्ति मरने के बाद दोबारा जीवित किये जाने को नहीं स्वीकारता वह काफिर है।

3- डरने वाले को डर स्वर्ग पहुँचाता है क्योंकि नबी ﷺ ने फरमाया:

«जो डरेगा वह रात के अंतिम भाग में सफर करेगा,और जो रात के अंतिम भाग में सफर करेगा वह मंज़िल तक पहुँच जायेगा,सुनो अल्लाह तआला की पूँजी बहुत कीमती है, सुनो अल्लाह तआला की पूँजी स्वर्ग बहुत कीमती है» (त्रिमिज़ी).

4- कयामत के दिन शांति,अल्लाहत तआला हदीसे कुदसी में फरमाता है: «मेरी इज़्ज़त की कसम मैं अपने बंदे पर दो डर और दो शांति इकठा नहीं करूँगा,अगर वह मुझ से दुनिया में डरेगा तो मैं उसे कयामत के दिन शांति दूँगा,और अगर मैं उसे दुनिया में शांति दूँगा तो उसे कयामत के दिन डराऊँगा» (बैहकी)

5- अल्लाह तआला ने अपने इस जैसे कथन में अपने जिन बंदों के गुण बयान किये हैं उस में दाखिल होना: {बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें,इताअत करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें,सच्चे मर्द और सच्ची औरतें,सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें,विनती करने वाले मर्द और विनती करने वाली औरतें,दान करने वाले मर्द और दान करने वाली औरतें,रोज़े रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें,अपनी शर्मगाह की हिफाज़त करने वाले मर्द और अपनी शर्मगाह की हिफाज़त करने वाली औरतें"}[अल अहज़ाब: 35].

यह सब अच्छे शब्द हैं जिन्हें प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिये,



अल्लाह तआला ने फरमाया: {उन की करवटें अपने बिस्तरों से अलग रहती हैं,अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं,और जो कुछ हम ने उन्हें दे रखा है वह खर्च करते हैं,कोई पराणी नहीं जानता जो कुछ हम ने उन की आँखों की ठंडक उन के लिये छिपा रखी है,जो कुछ करते थे यह उस का बदला है"}[अस्सज्दा: 16].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {भला वह इन्सान जो रातों के समय सज्दा और खड़े होने की हालत में इबादत में गुज़ारता हो,आखिरत से डरता हो और अपने रब की रहमत की उम्मीद रखता हो,बताओ तो आलिम और जाहिल क्या बराबर हैं,बेशक नसीहत वही हासिल करते हैं जो अकलमंद हों"}[अज्जुमर: 9].

और अल्लाह तआला ने फरमाया: {और जो अपने रब के अज़ाब से डरते रहते हैं बेशक उन के रब का अज़ाब बेखौफ होने की बात नहीं"}[अल मआरिज: 27-28].

और अल्लाह तआला ने अपने करीबी बंदो की प्रशंसा की है और वे पैगम्बर हैं,क्योंकि वे अल्लाह से डरने वाले हैं: {ये नेक लोग नेक अमल की ओर जल्दी दौड़ते थे,और हमें चाहत और डर के साथ पुकारते थे"}[अल अंबिया: 90].

बल्कि फरिश्ते स्वयं अपने रब से डरते हैं,अल्लाह तआला ने फरमाया: {और अपने रब से जो उन के ऊपर है कपकपाते रहते हैं और जो हुक्म मिल जाये उस के पालन करने में लगे रहते हैं"}[अन्नहल: 50].

6- अल्लाह तआला की प्रसन्नता: {अल्लाह उन से खुश हुआ और ये उस से खुश हुये,यह है उस के लिये जो अपने रब से डरे"}[अल बय्यिना: 8].



अल्लाह तआला का ज्ञान रखने वालों का डर

अल्लाह तआला को पहचानने वाले बंदे अपने अच्छे अमल और अल्लाह तआला से आशा करने के कारण निःसंदेह यही अल्लाह तआला से डरते और अधिक खौफ खाते हैं,उदाहरण के तौर पर:

- नबी ﷺ का नमाज़ की हालत में रोना,आप नमाज़ की हालत में इस प्रकार रोते कि रोन के कारण आप के सीने से हंडी पकने जैसी आवाज आती। (अहमद,अबूदाऊद,नसाई)।

-अबू बक्र رضي الله عنه अपनी जुबान पकड़ कर कहते:

«इसी ने मुझे हलाकत में डाला है»

और कहते

«ऐ काश मैं ऐसा पेड़ होता जिसे खालिया जाता»

उमर बिन खताब رضي الله عنه कहते:

«ऐ काश मैं कोई ऐसी चीज़ न होता जिस का ज़िक्र किया जाता है,ऐ काश मेरी माँ ने मुझे पैदा ही न किया होता»,

और कहते

«अगर फुरात के किनारे कोई ऊँट मर जाता तो मुझे डर होता कि कहीं अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस के बारे में मुझ से सवाल न करे»

और कहते

«अगर आसमान से पुकार लगाने वाला पुकार के कहता: ऐ लोगो तुम सब स्वर्ग में परवेश करने वाले हो सिवाय एक के तो मुझे डर होता कि वह एक मैं ही तो नहीं»!!

- उसमान बिन अफफान رضي الله عنه कहते हैं:

«मैं चाहता हूँ कि मर जाऊँ और दोबारा जीवित न किया जाऊँ»,

आप पूरी रात तस्बीह,नमाज़ और क़ुआन की तिलावत में गुज़ार देते थे।

मुसलमानों की माँ आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा अल्लाह तआला का यह कथन पढ़ती थीं: {तो अल्लाह ने हम पर बड़ा उपकार किया,और हमें तेज़ गर्म हवाओं के परकोप से बचा लिया"}।

[अय़र: 27].

अपनी नमाज़ में (पढ़तीं) पस वह अधिक रोती थीं..

{अगर तू इन को सज़ा दे तो यह तेरे बंदे हैं और अगर तू इन्हें माफ करदे तो तू ज़बरदस्त हिक्मत वाला है"}।[अल माइदा: 118].

डर के अहकाम और उस विषय में चेतावनी:

1- खशिऱ्या शब्द खौफ शब्द से खास है,खशिऱ्या का अर्थ जो अल्लाह तआला को पहचानते हुये डरे: {अल्लाह से उस के वही बंदे डरते हैं जो जानकार हैं,बेशक अल्लाह तआला ग़ालिब,और बड़ा माफ करने वाला है"}।[फ़ातिर: 28].

डर जो ज़ान के साथ मिला हुआ हो,नबी ﷺ ने फरमाया: «अल्लाह की क़सम में तुम सब से अधिक परहेज़गार और अल्लाह से डरने वाला हूँ» (मुस्लिम),

और अल्लाह तआला,उस के नामों,उस की विशेषताओं,उस के कमाल और उस की महिमा के विषय में जानकारी के बक़दर अल्लाह का डर और उस का खौफ होगा।

2- डर उस समय लाभदायक होगा जब वह मेहनत,अमल,और अफसोस अथवा गुनाहों के न करने के इरादे के साथ तोबा करने पर उभारे,तो डर अपराध की कुरूपता के ज़ान और चेतावनी (वईद) के अनुसमर्थन और अल्लाह के ज़ान से पैदा होता है जो बड़ा,महान और सर्वशक्तिमान है,और इस प्रकार अल्लाह का डर की कल्पना नहीं की जा सकती जो अमल,मेहनत और तोबा की ओर न बुलाये।



3- अल्लाह तआला से डरना यह वाजिबात में से एक वाजिब है,और यही ईमान का तकाज़ा भी है,और यह बेहतर मार्ग और दिल के लिये लाभदायक है,अथवा ये हर इन्सान के लिये अनिवार्य है,और गुनाहों,दुनियादारी,बुरी संगत,अचेतना और एहसासे कमतरी से बचाता है।

"अल्लाह से उस के वही बंदे डरते हैं जो जानकार हैं,बेशक अल्लाह तआला गालिब,और बड़ा माफ करने वाला है"। (फातिर: 28).

जो अल्लाह से डरेगा उसे कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुँचा सकती,और जो अल्लाह के अतिरिक्त से डरेगा उसे कोई चीज़ लाभ नहीं पहुँचा सकती।

अल फुजेल बिन अयाज

समीक्षा:

- 1- जो चीज़ें अल्लाह से डर को बढ़ाती हैं उसे बताइये और गिनाइये।
- 2- जो कुछ अल्लाह तआला के नामों और उस की विशेषताओं को आप जानते हैं जो अल्लाह का खौफ पैदा करती हैं उसे बयान करो।
- 3- अल्लाह से डरने वाले को क्या करना चाहिये?